INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

Impact Factor – 6.625 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

October-2019 Special Issue – 200

Cotemporary Problems in India and Remidies

Guest Editor :
Dr. R. V. Shikhare
Principal
R. B. Attal Arts, Science & Commerce College,
Georai, Dist. Beed (M.S) India

Associate Editors -
Mr. H. B. Helambe
Mr. B. S. Jogdand
Mr. R. B. Kale
Mr. S. S. Nagare
Mr. R. B. Pagore

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar (Yeola)

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

31	Temporal Analysis of Vegetation by Vegetation Indices from Multi Dates Satellite Images : Application to Dindori Tahsil, Nashik District, Maharashtra.	**Sitaram Nikam & Dr. D. S Gajhans**	131
32	East-West Cultural Encounter in Chitra Bangerjee's Novel Oleander Girl	**Mr. Satish Funne**	136
33	Problems of Rural Migration in India	**Mr. B. S. Jogdand**	140
34	White Collar Crime in India	**Mr. Bandu Patekar**	143
35	Poverty in India	**Mr. Ganesh Walunj & Dr. Suhas Avhad**	146
36	Causes of Poverty and Remedies in Contemporary India	**Prof. Dattatraya Mundhe**	150
37	An Approach towards Social Security	**R. J. Gaikwad**	153
38	Sports Medicine in Human Health by Environment Provocation	**Ravindra Kharat**	156
39	Child Labour in Brick Kiln Industries	**Shaikh Jahara Abdul Rahim**	158
40	Main Causes of Economic Inequality in India	**Mr. Vaibhav Shendage**	162
41	Naxalism in India : A Revolution of Displaced Tribal People for Social Justice	**Shesherao Rathod**	166
42	Poverty in An Unorganised Sector	**Dr. Sonal Ubale**	170
43	Corruption : A Contemporary Problem in India	**Subhash Pole**	173
44	Modernization Beacon throughout Renovaton Task : Development in Literature Dissection	**Uday Kharat**	176
	हिंदी विभाग		
45	भक्षक एकांकी और पर्यावरण समस्या	**डॉ. संदिप बनसोडे, रामेश्वर देवरे**	178
46	भारत मे आतंकवाद की समस्या	**दीपक डोंगरे**	181
47	रचनात्मक विकास मे निरक्षरता बाधक नही	**प्रा. दीप्ती होळकर**	184
48	कान्हा कोयला क्षेत्र मे कार्यरत श्रमिको का जीवन स्तर 'जिला छिंदवाडा के संदर्भ मे	**डॉ. शशि बाला भट्ट**	189
49	भारतीय नारी – सामाजिक शोषण (कहानी विशेष)	**डॉ. अरविंद घोडके**	198
50	भारत की निर्धनता : रणनीतियाँ और कार्यक्रम	**डॉ. जे.एस.धायगुडे**	200
51	प्रेमचंद के उपन्यासो में विधवा नारी की समस्या	**डॉ. संगीता आहेर**	208
52	समकालीन हिंदी ग़ज़लो में चित्रित सामाजिक समस्याएँ	**डॉ. सय्यद शौकत अली**	211
53	समकालीन हिंदी ग़ज़ल में पूँजीवाद	**डॉ. रजनी शिखरे**	216
54	भारतीय साहित्य में सामाजिक समस्याएँ (मध्यकालीन संत साहित्य के विशेष संदर्भ में)	**डॉ. ललिता राठोड**	219
55	हिंदी ग़ज़ल में जीवनमूल्य	**डॉ. रजनी शिखरे**	222
56	हिंदी साहित्य में नारी जीवन की समस्याएँ	**डॉ. रजनी शिखरे, एच. टी. पोट कुले**	225
57	भारत में भ्रष्ट्राचार की समस्या	**डॉ. आर.के. देशमुख**	229
58	भ्रष्ट्राचार	**महादेव करडे**	233
59	सामाजिक विकास पर पर्यावारणीय प्रभाव	**किरण पवार, कविता जोशी**	239
60	हिंदी ग़ज़ल में आर्थिक समस्या	**डॉ. रजनी शिखरे, डॉ. मनोजकुमार ठोसर**	243
61	प्रकृति सौंदर्य के कवि : केदारनाथ अग्रवाल	**संतोष नागरे**	246
62	दलित साहित्य में समाजिक समस्याएँ (अनुदित आत्मकथा के संदर्भ में)	**डॉ. रजनी शिखरे, राजाराम जाधव**	251
63	भारत में आतंकवाद की समस्या	**डॉ. रमेश व्ही.मोरे**	255
64	वैश्विकरण की आंधी में दरकते संस्कार : सिसकते वृद्ध दिमर्श पर एक दृष्टि	**ऋचा राय**	257

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.625, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)–0.676 (2013)
Special Issue 200 : Contemporary Problems in India and Remidies
ISSN : 2348-7143
October-2019

हिंदी ग़ज़ल में जीवनमूल्य

डॉ.रजनी शिखरे
सहयोगी प्राध्यापक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष
र.भ.अट्टल महाविद्यालय गेवराई,जि.बीड
(महाराष्ट्र)

ग़ज़ल साहित्य ने भारतीय साहित्य को समृध्द कर नये कीर्तिमान स्थापित किए है। उर्दू से हिंदी में आयातीत काव्य-विधा अन्य भारतीय भाषाओं में भी अभिव्यक्ति के शिखर पर मार्गक्रमण कर रही है। समाज की समसामायिक समस्याओं को समेटते हुए ग़ज़ल ने हिंदी काव्य-परंपरा को विकसित किया है। साहित्य के गुण एवं अभिव्यक्त कथ्य की दृष्टि से ग़ज़ल ने व्यक्तिवादिता से सामाजिकता को व्यक्त किया है।

समाज के जीवनमूल्य किस प्रकार बदल रहे है। नई सभ्यता ने नयी समस्या निर्माण की है। वैश्वीकरण ने मनुष्य जीवन को इस प्रकार प्रभावित किया है कि मनुष्य जीवन में स्वार्थ एवं लालच निर्माण किया है। मनुष्य को मानवीयता से अधिक पैसा, धन एवं स्वार्थ ने घेर लिया है। अपनी समृध्द परंपरा की जगह समाज में विसंगतियाँ, आर्थिक समस्या राजनीतिक भ्रष्टाचार एवं धार्मिक स्थितियों की यथार्थता आदि को ग़ज़लकारों ने चित्रित किया है। "स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात समाज में आये परिवर्तन एवं स्वार्थी प्रवृत्ति के बढ़ते मिजाज को हमें परिचित कराने में समकालीन हिंदी ग़ज़ल मदद कर रही है। हिंदी ग़ज़लकारों ने अपने समय के यथार्थ से आँख नहीं चुरायी, बल्कि खुली आँखों से यथार्थ को देखा तथा जीवन में उसे भोगा भी है। सामाजिक जीवन के यथार्थ एवं विसंगतियों तथा विद्रुपताओं को उसने अपनी अभिव्यक्ति का आधार बनाया उनपर उसने कठोर प्रहार भी किया हैं। हिंदी ग़ज़लकारों ने युगीन परिवेश को दृष्टि में रखकर सामाजिक समस्याओं का विविध रुपों में चित्रण किया है।"[1]

भारतीय समाज वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में स्वयं में बदल कर रहा है। परंतु उसमें जिस प्रकार परिवर्तन जरुरी है वैसा परिवर्तन नहीं हो रहा। भारतीय मनुष्य अनैतिकता की ओर जाता हुआ नजर आ रहा है। स्वार्थ लोलुंप मनुष्य ने धन या पैसा महत्त्वपूर्ण मानकर उसे कमाने के लिए गैरकानूनी रास्ता अपनाया है। जिस कारण समाज में अपनापन, मनुष्यता या प्रेम का अभाव दिखाई दे रहा है। यांत्रिकीकरण के युग में आत्मिक सुख की जगह भौतिक सुख के पीछे मनुष्य का चित्रण ग़ज़लकारों ने किया है। बंद दरवाजों की शहरी संस्कृति का यथार्थ चित्रण दुष्यंतकुमार ने किया है। वे कहते हैं कि मनुष्य ने स्वयं को कैद किया है। शहरी मनुष्य बारात या वारदात में घर-से बाहर नहीं निकलता। वह खिडकी भी बंद करने के प्रयास में है। उनका शेर देखिये-

"इस शहर में वो कोई बारात हो या वारदात
अब किसी भी बात पर खुलती नहीं खिड़कियाँ।"[2]

आजकल समाज में अच्छा दृश्य दिखाई नहीं दे रहा है। लोग अच्छी बातें भी नहीं करते। समाज की प्रस्तुत विसंगतियों का यथार्थ चित्रण दुष्यंतकुमार की ग़ज़ल में हुई है।

"नजारों में आ रहे है नजारे बहुत बुरे
होठों में आ रहीं जुबाँ और भी खराब।"[3]

डॉ.कुँअर बेचैन कहते है कि आजकल समाज में मनुष्य जानवरों के समान महसुस हो रहा है। वह कहने भर को ही मनुष्य रहा है। वह अपने मन में या जेहन में खूनी पंजे लेकर बैठा है। "दिन-दहाडे अनैतिक अत्याचार, हिंसा, बलात्कार जैसी घटनाएँ घट रही है। मनुष्य आदमी से दिन ब दिन पशुतुल्य होता जा रहा है। समाज में मानवता खत्म होती जा रही है। उसी का वर्णन डॉ. कुँअर बेचैन जी अपने ग़ज़ल में किया करते हैं।"[4] उनका शेर देखिये-

"खूनी पंजे लेके बैठे है दिलों में हम कुँअर

सिर्फ कहने भर को ही हम आदमी की जात है।"[5]

समाज में आज पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण हो रहा है। भारतीय समृध्द परंपरा एवं मान्यताओं का अंत हो रहा है। मानवीय जीवनमूल्यों पर संकट निर्माण हो गए है। मनुष्य अपना शील, ईमान और आदर्श की जगह स्वयं की स्वार्थ साधने की कोशिश में हैं। मनुष्य की अस्मिता एवं वुजूद को ढूँढने का असफल प्रयास कर रहा है। वह हिंस्र पशु के समान बनता जा रहा है। मनुष्य जीवन में स्वार्थ, भौतिक सुख, पूँजीवाद, बाजारवाद एवं पाश्चात्यों के अनुकरण पर अधिक विश्वास कर रहा है। मनुष्य के जीवन की समस्याएँ घुटन, संत्रास एवं अकेलेपन से मानवीय जीवन आजकल आत्महत्या की ओर जाता हुआ नजर आ रहा है। उसका चित्रण चंद्रसेन विराट जी ने ग़ज़ल में किया है-

"एक भी मानक अखंडित है नहीं
मूल्यों पर आक्रमण है इन दिनों।
बाद में है आदमी की अस्मिता
कैबरों में आचरण है इन दिनों।
शील का ईमान का आदर्श का
अपहरण ही अपहरण है इन दिनों।"[6]

अशोक अंजुम बदलते सामाजिक परिवेश में मनुष्य का वर्तन किस प्रकार बदला है उसका यथार्थ वर्णन ग़ज़ल में करते है। अहिंसा और मानवीयता की बात करनेवाले भारत में हथियारों का बाजार निर्माण हो रहा है। बंदूक, खंजर और बम विस्फोटक से भारतीय शहरों में भय का वातावरण निर्माण हुआ है। जिनके हाथों में फूल है उनके हाथो में खंजर आ गए है। मेहनत करनेवाले लोग आजकल गरीब से अधिक गरीब बन रहे है। इस राजनीतिक एवं सामाजिक विसंगतियों का सीधा वर्णन ग़ज़ल में किया है। "राजनीतिक अध:पतन और उसके कारण मानवीय जीवनमूल्यों का ऱ्हास सामाजिक यथार्थ का एक पहलू है। राजनीति आज जीवन के हर क्षेत्र में इस सीमा तक प्रविष्ट हो गयी है कि मनुष्य की संवेदनाएँ थोथी और कुंद होती जा रही है। अशोक अंजुम का भावुक मन इस त्रासद स्थितियों से विचलित आवश्य होता है।"[7] जीवनमूल्यों के ऱ्हास की यथार्थ अभिव्यक्ति करनेवाले अशोक अंजुम की ग़ज़ल देखिये-

"कल तक फूल थे जिनके हाथों में
आज उन्हीं में खंजर देखे।
महल बनानेवाले यारों
अक्सर हमने बेघर देखे।"[8]

आज इस यांत्रिकीकरण के युग में मनुष्य उसके अधिन बन गया है। वह इतना व्यस्त हो गया है कि स्वयं हो मशीन बनने की कगार पर है। अपने अहसासों को भूलकर मानवीय भावनाओं का वर्णन कर रहा है। कहने भर को वह मनुष्य रहा है। ग़ज़लकार गिरिराजशरण अग्रवाल प्रस्तुत यन्त्रयुग में मनुष्य की क्या स्थिति हुई है इसका यथार्थ चित्रण ग़ज़ल में करते हैं। "मानवीय संबंधों और मूल्यों में आए ऱ्हास को उन्होंने अनेक स्थानों पर चित्रित किया है। आज कोई किसी की भावनाओं को समझने के लिए तैयार नहीं है। आनेवाले दु:ख से हर कोई घबरा रहा है।"[9] इसी यथार्थ की ओर अग्रवाल इशारा कर रहे है-

"व्यग्र था अहसास को अभिव्यक्त ही करता रहा
मेरे अंदर आदमी अहसास भर जिंदा रहा।"[10]

इस तरह हिंदी ग़ज़लकारों ने मानवीय जीवन मूल्यों के पतन एवं ऱ्हास का चित्रण करते हुए समाज के बदलते चेहरे को बेनकाब किया है। समाज में दिखाई देनेवाले खराब दृश्य, बूरी घटनाएँ, जहर भरा मन, अहसास की कमी, मनुष्यत्व का अंत, शील, ईमान, आदर्श पर आक्रमण, यान्त्रिकीकरण, मानवीय पशुता, बाजारवाद, पूँजीवाद एवं भौतिकवाद के प्रभाव

में मनुष्य की दुर्दशा आदि को यथार्थ रुप में चित्रित किया है। ग़ज़लकार जहीर कुरैशी पुरे विश्वास एवं उम्मीद के साथ हमें शाश्वत जीवनमूल्य की ओर ले जाने का प्रयास करते हैं।

"जो सत्यम् है शिवम् है जिन्दगी में
वो जाएगा ही सुन्दर की दिशा में।"[11]

संदर्भ ग्रंथ :

1. साठोत्तरी हिंदी ग़ज़ल- डॉ.मधु खराटे, पृ.73
2. साये में धूप- दुष्यंतकुमार, पृ.21
3. वही, पृ.48
4. कुँअर बेचैन की ग़ज़लों का चिंतन पक्ष- डॉ.रघुनाथ कश्यप, पृ.73
5. आँधियाँ धीरे चलो- कुँअर बेचैन, पृ.64
6. चंद्रसेन विराट की प्रतिनिधि ग़ज़लें- संपा. डॉ.मधु खराटे, पृ.49
7. रोशनी का घर- संपा. जितेन्द्र जौहर, पृ.68
8. अशोक अंजुम की प्रतिनिधि ग़ज़लें- अशोक अंजुम,- पृ.56
9. साठोत्तरी हिंदी ग़ज़ल- डॉ.अनिलकुमार शर्मा,- पृ.90
10. गिरिराजशरण अग्रवाल की प्रतिनिधि ग़ज़लें- डॉ.शिवाजी देवरे, पृ.74
11. जहीर कुरैशी की चुनिंदा ग़ज़लें- संपा.डॉ.मधु खराटे, पृ.84